

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री श्री गणेश नमः ॥

श्री गणेशाष्टकम्

Ganesh Ashtakam — संपूर्ण अष्टकम पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: परंपरागत (श्रीगणेशपुराण - उपासनाखण्ड) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण अष्टकम पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

श्लोक १

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ १ ॥

भावार्थ: जिन अनंत शक्ति संपन्न भगवान गणेश से अनंत जीव-जगत की उत्पत्ति हुई है, जो स्वयं निर्गुण (प्राकृत गुणों से परे) होकर भी असीम व अप्रमेय दिव्य कल्याणकारी गुणों से युक्त हैं, तथा जिनसे यह संपूर्ण संसार सत्त्व, रज और तम—इन तीनों गुणों के भेद से प्रकाशित होता है—उन साक्षात् परब्रह्म स्वरूप भगवान श्री गणेश को हम नित्य प्रणाम करते हैं और उनका अनन्य भाव से भजन करते हैं।

श्लोक २

यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्तथाऽब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता।
तथेन्द्रादयो देवसङ्घा मनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ २ ॥

भावार्थ: जिनकी शक्ति से यह संपूर्ण दृश्य-अदृश्य ब्रह्मांड प्रकट हुआ है; जिनसे कमल पर विराजमान सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी, सर्वव्यापी व संसार के पालनकर्ता श्रीविष्णु, देवराज इन्द्र, समस्त देवगण और मानव समाज का प्राकट्य हुआ है—उन सर्वकारण-कारण भगवान श्री गणेश को हम सदा नमन करते हैं और उनकी आराधना करते हैं।

श्लोक ३

यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः।
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्षसङ्घाः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ ३ ॥

भावार्थ: जिनसे अग्नि, सूर्य, संहारक भगवान शिव, पृथ्वी, जल, अगाध सागर, चंद्रमा, अनंत आकाश और जीवनदायिनी वायु उत्पन्न हुई है; तथा जिनसे समस्त जड़, चेतन और वनस्पतियों-वृक्षों का विस्तार हुआ है—उन प्रकृति के परम स्वामी भगवान श्री गणेश को हम नित्य वंदन करते हैं और उनका स्मरण करते हैं।

श्लोक ४

यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घा यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ ४ ॥

भावार्थ: जिनकी कृपा और संकल्प शक्ति से दानव, किन्नर, यक्ष, चारण (देव गायक), गजराज (हाथी), हिंसक पशु, गगनगामी पक्षी, कीट-पतंगे और लताएं-वृक्ष आदि समस्त योनियों की सृष्टि हुई है—उन सर्वव्यापक मंगलमूर्ति श्री गणेश जी को हम सदा प्रणाम करते हैं और उनकी भक्ति में लीन होते हैं।

श्लोक ५

यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्तसन्तोषिकाः स्युः।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ ५ ॥

भावार्थ: जिनके पावन अनुग्रह से मोक्ष की इच्छा रखने वाले साधकों को तत्वज्ञान व सद्बुद्धि प्राप्त होती है और उनके अज्ञान का नाश होता है; जिनसे भक्तों को संतोष प्रदान करने वाली समस्त लौकिक व पारलौकिक संपत्तियाँ प्राप्त होती हैं; और जिनके स्मरण मात्र से समस्त विघ्न-बाधाएं नष्ट होकर हर कार्य निर्विघ्न सिद्ध होता है—उन विघ्नविनाशक श्री गणेश को हम नित्य नमन करते हैं।

श्लोक ६

यतः पुत्रसम्पद्यतो वाञ्छितार्थो यतोऽभक्तविघ्नास्तथाऽनेकरूपाः।
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥ ६ ॥

भावार्थ: जिनकी कृपा से कुल को तारने वाली उत्तम संतान-संपदा और समस्त मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं; जो भक्तिहीन व अधर्मी व्यक्तियों के कार्यों में विभिन्न प्रकार के विघ्न डालकर उन्हें धर्म मार्ग का बोध कराते हैं; तथा जिनसे समस्त कामनाएं, संताप और मोह दूर होकर साधक को परम शांति मिलती है—उन सर्वसमर्थ भगवान श्री गणेश को हम सदा भजते हैं।

श्लोक ७

यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः।
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥ ७॥

भावार्थ: जिनके तेज और सामर्थ्य से अनंत शक्तियों वाले भगवान शेषनाग इस विशाल पृथ्वी को अपने सहस्र फणों पर धारण करने में समर्थ हुए हैं; तथा जिनसे अनेक प्रकार के दिव्य स्वर्गलोक और वैकुंठादि धाम रचे गए हैं—उन महामहिम परमेश्वर श्री गणेश को हम सदा श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

श्लोक ८

यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः॥ ८॥

भावार्थ: जिनके अनंत स्वरूप का पूर्ण वर्णन करने में वेद-शास्त्रों की वाणी और मन भी असमर्थ (कुंठित) होकर 'नेति-नेति' (यह भी नहीं, वह भी नहीं) कहकर जिनकी महिमा का गान करते हैं; जो साक्षात् सच्चिदानंद परब्रह्म के परम पावन विग्रह रूप हैं—उन सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर भगवान श्री गणेश को हम बारंबार नमन करते हैं और उनका ध्यान करते हैं।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं समय:** गणेशाष्टकम् का पाठ नित्य प्रतिदिन करना परम कल्याणकारी है। विशेष रूप से **बुधवार**, प्रत्येक माह की **संकष्टी चतुर्थी**, **विनायक चतुर्थी** तथा **गणेश चतुर्थी (गणेशोत्सव)** के पावन दिनों में इसका पाठ अनंत गुना फल प्रदान करता है। प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में अथवा संध्याकाल में पूजा के समय पाठ करना सर्वोत्तम माना गया है।
- **शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि:** स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ पीले, लाल अथवा श्वेत वस्त्र धारण करें। मन से समस्त चिंता, द्वेष और नकारात्मक विचारों को त्यागकर शांत चित्त से पूजा स्थान पर बैठें।
- **दिशा एवं आसन:** पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। पाठ के लिए कुशा, ऊन अथवा लाल रंग के स्वच्छ आसन का उपयोग करें।
- **दीप प्रज्वलन एवं प्रतिमा स्थापना:** पूजा स्थल पर भगवान गणेश की सुंदर प्रतिमा अथवा चित्र स्थापित करें। उनके सम्मुख शुद्ध गाय के घी का या तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करें और सुगंधित धूप जलाएं।
- **प्रिय पूजन सामग्री अर्पण:** श्री गणेश जी को लाल चंदन, रोली, अक्षत और सिंदूर का तिलक लगाएं। उन्हें २१ दूर्वा (दूब घास) की गांठें, लाल गुड़हल या गेंदे का पुष्प अर्पित करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त विघ्नों और संकटों का समूल विनाश:** पंचम श्लोक में स्पष्ट उद्घोष है — *'यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः'*. जो साधक इस अष्टक का पाठ करता है, उसके व्यापार, नौकरी, विवाह अथवा गृह-निर्माण में आने वाले समस्त अवरोध स्वतः समाप्त हो जाते हैं और कार्य सिद्ध होते हैं।
- **तीव्र बुद्धि, विवेक एवं अज्ञान का नाश:** *'यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोः'*. भगवान गणेश बुद्धि के दाता हैं। इस स्तोत्र के पाठ से विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति बढ़ती है, निर्णय लेने की क्षमता परिपक्व होती है और मन की एकाग्रता में वृद्धि होती है।
- **अक्षय धन, समृद्धि एवं संतोष की प्राप्ति:** *'यतः सम्पदो भक्तसन्तोषिकाः स्युः'*. नियमित पाठ करने वाले भक्तों के घर में कभी भी अन्न-धन और वैभव की कमी नहीं रहती तथा मन में सच्चा आत्मिक संतोष उत्पन्न होता है।
- **संतान सुख एवं मनोवांछित फलों की सिद्धि:** छठे श्लोक में वर्णन है — *'यतः पुत्रसम्पद्यतो वाञ्छितार्थो'*. निष्ठावान पाठकों को योग्य संतान का सुख मिलता है और उनकी समस्त सात्विक मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- **भय, रोग एवं ग्रह-दोषों से मुक्ति:** भगवान गणेश समस्त प्रकृति, ग्रह और देवों के परम स्वामी हैं (*'यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च'*). इनके ध्यान से कुंडली के बुध ग्रह, केतु दोष तथा राहु की पीड़ा शांत होती है और घर में सुख-शांति का वास होता है।